परमात्म ऊर्जा

भक्ति में भी पुकारते हैं ना - एक बार हाथ पकड़ लो। तो बाप हाथ पकड़ते हैं, हाथ में हाथ देकर चलाना चाहते हैं फिर भी हाथ छोड़ देते हैं तो भटकना नहीं होगा तो क्या होगा? तो अब अपने आपको भटकाने के निमित्त भी स्वयं ही बनते हो। जैसे कोई भी योद्धा युद्ध के मैदान पर जाने से पहले ही अपने शस्त्र को, अपनी सामग्री को साथ में रख कर फिर मैदान में जाते हैं। ऐसे ही इस कर्मक्षेत्र रूपी मैदान पर कोई भी कर्म करने अथवा योद्धे बन युद्ध करने के लिए आते हो, तो कर्म करने से पहले अपने शस्त्र अर्थात् यह अष्ट शक्तियों की सामग्री साथ रख कर फिर कर्म करते हो? व जिस समय दुश्मन आता है उस समय सामग्री याद आती है? तो फिर क्या होगा? हार हो जाएगी।

सदा अपने को कर्मक्षेत्र पर कर्म करने वाले योद्धे अर्थात् महारथी समझो। जो युद्ध के मैदान पर सामना करने वाले होते हैं वह कभी भी शस्त्र को नहीं छोड़ते हैं। ऐसे ही सोते समय भी अपनी अष्ट शक्तियों को विस्मृति में नहीं लाना है अर्थात् अपने शस्त्र को साथ में रखना है। ऐसे नहीं- जब कोई माया का वार होता है उस समय बैठ सोचो कि क्या युक्ति अपनाऊं? सोच करते-करते ही समय बीत जाएगा। इसलिए सदैव एवररेडी रहना चाहिए। सदा अलर्ट और एवररेडी रहना चाहिए। सदा अलर्ट और एवररेडी अगर नहीं हैं तो कहीं ना कहीं माया धोखा खिलाती है और धोखे का रिज़ल्ट क्या होता? अपने आपको देख कर ही दुःख की लहर उत्पन्न हो जाती है। अपनी कमी ही कमी को लाती है। अगर अपनी कमी नहीं है तो कब भी कोई भी कमी नहीं आ सकती। बेगमपुर के बादशाह कहते थे ना। यह इस समय की स्टेज है जबकि गम की दुनिया सामने है। गम और बे-गम की अभी नॉलेज है। इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते, इसलिए बेगमपुर का बादशाह कहा जाता है। भले बेगर हो लेकिन बेगर होते भी बेगमपुर के बादशाह हो। तो सदा इस नशे में रहते हो कि हम बेगमपुर के बादशाह हैं? बादशाह अथवा राजे लोगों में ऑटोमेटिकली शक्ति रहती है राज्य चलाने की। लेकिन उस ऑटोमेटिक शक्ति को अगर सही रीति काम में नहीं लगाते हैं, कहीं ना कहीं उल्टे कार्य में फंस जाते हैं तो राजाई की शक्ति खो लेते हैं और राज्य पद गंवा देते हैं। ऐसे ही यहाँ भी तुम हो बेगमपुर के बादशाह और सर्व शक्तियों की प्राप्ति है। लेकिन अगर कोई न कोई संगदोष व कोई कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो अपनी शक्ति खो लेते हो तो जो बेगमपुर का नशा व खुशी प्राप्त है वह स्वतः ही खो जाती है। जैसे वह बादशाह भी कंगाल बन जाते हैं, वैसे ही यहाँ भी माया के अधीन होने के कारण मोहताज, कंगाल बन जाते हैं।

तब तो कहते हैं - क्या करें, कैसे होगा, कब होगा? यह सभी है कंगालपन, मोहताजपन की निशानी। कहां न कहां कोई कर्मेन्द्रियों के वश हो अपनी शक्तियों को खो लेते हैं। समझा?

आबू रोड-राज.। फतेहपुरा बहादुरपुरा ग्राम पंचायत में ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय माउण्ट आबू द्वारा संचालित रेडियो मधुबन 107.8 एफएम के कम्युनिटी रिपोर्टर आर.जे. ब्र.कु. पवित्र ने स्थानीय जनजाति लोगों को नशा मुक्त बनाने के लिए चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से सभी को जागरूक किया।

कथा सरिता

कार्य कराने से पहले सुनिश्चित करें

एक सेठ जोकि काफी ज़्यादा कंजूस था। सालों से वह एक ही पजामा पहन रहा था और वह नया पजामा नहीं लेता था। उसे लगता था कि इससे पैसा खर्च होगा। घर वालों के बहुत प्रयास करने के बाद कंजूस सेठ ने एक पजामा खरीद लिया।

जब पजामा सिलकर तैयार हुआ और जब सेठ अपनी दुकान पर जा रहा था तो उसने नहा कर वह पजामा पहनने का निर्णय लिया। सेठ ने उस पजामे को पहना तब उसे पता चला कि वह पजामा पांच अंगुली बड़ा है।

उसने उस पजामे को उतार दिया और सेठानी के पास गया कि इस पजामे को पांच अंगुली छोटा कर दो ताकि मैं इसे पहन सकूं परंतु सेठानी अपने कार्य में बिजी थी, सेठानी ने कहा कि इसे रख दो मैं बाद में कर दूंगी।

सेठ ने कहा ठीक है इसे कर देना परंतु सेठ को लगा कि शायद सेठानी भूल न जाए इसलिए वह अपनी पुत्रवधु के पास गया और उससे कहा कि पुत्री इस पजामे को पांच अंगुली छोटा कर देना यह बड़ा है

और मैं इसे पहन नहीं पा रहा हूँ, पुत्रवधु ने कहा ठीक है पिताजी।

मैं अनाज को साफ करने के बाद आपके पजामे को ठीक कर दूंगी परंतु सेठ को लगा कि पुत्रवधु अपने कार्य में कुछ ज़्यादा ही व्यस्त है इसलिए वह अपनी बेटी के पास गया और उसे कहा कि बेटी मेरा पजामा पांच अंगुली बड़ा है इसे तुम पांच अंगुली छोटा कर दो। बेटी पढ़ाई में व्यस्त थी इसलिए उसने कहा पिता जी आप इसे रख दीजिए मैं इसे ठीक कर दूंगी।

सेठ ने पुराना पजामा पहना और दुकान पर चला गया कुछ समय बाद सेठानी को याद आया कि सेठ जी ने बोला था पजामे को पांच अंगुली छोटा करना है।

सेठानी ने पजामे को पांच अंगुली छोटा कर दिया और उसे टांग दिया फिर बहू को याद आया कि ससुर जी पजामे को छोटा करने को बोलकर गए हैं इसलिए पुत्रवधु ने भी पजामे को पांच अंगुली छोटा कर दिया।

थोड़ी देर बाद बेटी भी पढ़ाई से फ्री हुई तो उसे भी याद आया कि पिताजी का पजामा पांच अंगुली छोटा करना है उसने भी पजामे को पांच अंगुली छोटा कर दिया।

जब सेठ रात को आया और जब उसने पजामे को देखा तब उसे समझ में आया कि वह पजामा पहनने के लायक नहीं बचा है क्योंकि उसने तीनों से एक ही समय पर वह कार्य करने को कह दिया इसलिए वह कार्य बिगड़ गया। जिसमें उसी की ही गलती थी। इसलिए वह किसी को कुछ कह भी नहीं सका।

सीख: हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने कार्य को किसी को देने से पहले सुनिश्चित करना चाहिए कि वह कार्य को कौन करेगा यदि एक ही समय पर एक कार्य को कई लोग करेंगे तो वह कार्य अत्यधिक बिगड़ सकता है।

मुश्किल वक्त में कभी भी हार न मानें...

एक गांव में बहुत अमीर व्यक्ति रहा करता था। जिसका नाम किशोर था और उसकी पत्नी का सरिता था। दोनों की कोई संतान नहीं थी। उनकी शादी को काफी समय हो चुका था वह दोनों काफी ज़्यादा अमीर थे। इसलिए अपने घर की देखभाल के लिए दो नौकर रख रखे थे। जिनका नाम बहादुर और शमशेर था।

उसी गांव के बाहर दो चोर थे और उनसे पूरा गांव परेशान था क्योंकि वह लोगों की अत्यधिक सावधानी के बावजूद भी चोरी कर लेते थे। उन दोनों चोरों ने विचार बनाया गांव के धनी व्यक्ति

किशोर के घर चोरी करने का।

वह रात्रि होते ही किशोर के घर में घुस गए। वह घर में कीमती सामान ढूंढने लगे परंतु गलती से एक चोर के हाथ से कुछ गिर गया और शोर होने के कारण सरिता जग गई और आवाज़ होने के कारण समझ गई कि कमरे के बाहर चोर हैं।

परंतु यदि वह कमरे से बाहर गई तो उन दोनों पति-पत्नी की जान को खतरा है। सरिता जानती थी कि यदि वह अपने दोनों नौकरों को किसी प्रकार उठा दे तो वह इन चोरों को आसानी से पकड़ लेंगे।

परंतु मुश्किल थी कि उन दोनों नौकरों को किसी प्रकार उठाया जाए वह पास के कमरे में ही सो रहे थे, जहाँ तक आवाज़ पहुंचना कोई मुकिश्ल कार्य नहीं था।

परंतु यदि वह बिना किसी कारण के उन दोनों को आवाज़ लगाती है तो चोर समझ जाएंगे कि वह जान चुकी है कि घर में चोरी हो रही है इससे उन दोनों की जान को खतरा भी हो सकता है।

इसलिए सरिता ने ऐसा नहीं किया। उसने अपने पति को उठाया और कहा कि हमारे घर में चोर हैं हमें बहादुर और शमशेर को उठाना होगा। तो पति को समझ में नहीं आया कि यह कैसे होगा।

चोर कमरे के बाहर तक पहुंच चुके थे जिससे दोनों की जान को भी खतरा था। पत्नी ने कहा कि मैं जैसा कहती हूँ वैसा ही करो। पत्नी ने चिल्लाते हुए कहा कि सुनो जी आपको तो पता ही है कि मैं माँ बनने वाली हूँ।

अगर हमारा बेटा हुआ तो आप उसका क्या नाम रखेंगे? पति ने चिल्लाते हुए कहा कि मैं उसका नाम 'बहादुर' रखूंगा, फिर पत्नी ने ज़ोर आवाज़ से कहा कि आपका अगर दूसरा बेटा हुआ तो आप उसका क्या नाम रखेंगे?

पति ने चिल्लाते हुए कहा कि 'शमशेर' नाम रखूंगा फिर पत्नी ने कहा कि अगर तीसरा बेटा हुआ तो आप उसका क्या नाम रखेंगे? पति ने कहा कि मैं उसका नाम चोर रखूंगा।

यह सुन दोनों चोर जोकि कमरे के बाहर थे बहुत खुश हुए फिर सरिता ने कहा कि आपकी आवाज़ में तो दम ही नहीं है ज़ोर से बताओ कि आप अपने तीनों बेटों का क्या नाम रखोगे?

किशोर ने ज़ोरों से चिल्लाते हुए बताया कि 'बहादुर, शमशेर, चोर' सरिता बोली तुम्हारी आवाज़ में तो दम ही नहीं है मुझे ज़ोरों से सुनना है ताकि पता चले कि तुम कितने खुश हो।

पति ने ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा 'बहादुर, शमशेर, चोर' 'बहादुर, शमशेर, चोर' यह सुन बहादुर और शमशेर उठे और मालिक के कमरे की तरफ भागे उन्होंने बाहर चोरों को देखा और उन्हें पकड़ लिया।

सीख : इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि मुश्किल वक्त में कभी भी हमें मानसिक संतुलन नहीं खोना चाहिए। ऐसा करना एक बड़ी समस्या को आमंत्रण देने जैसा है। इसलिए हमें कभी भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।